

पूर्व मध्यकालीन इतिहास में नारी शिक्षा : एक समीक्षा



डॉ० विनोद कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर,
आदर्श कृष्ण पी०जी० कालेज शिकोहाबाद

जीवन के समस्त पहलुओं के सर्वांगीण विकास का माध्यम शिक्षा है। प्राचीन भारतीय संस्कृति की ओर दृष्टिपात करने पर शिक्षा के क्षेत्र में नारी की स्थिति अत्यन्त संतोषजनक पाते हैं। जैसे ही नारी के धार्मिक अधिकारों का द्यस होने लगा, उसके परिणामस्वरूप नारी शिक्षा का भी द्यस होने लगा। बालिकाओं का उपनयन संस्कार समाप्त होते ही उसके वेदोच्चारण का मार्ग भी अवरुद्ध हो गया। इस युग में शूद्रों की तरह वेदों के पठन-पाठन और यज्ञों में सम्मिलित होने के अधिकार से भी स्त्रियों को वंचित कर दिया गया वस्तुतः शिक्षण संस्थाओं और गुरुकुलों में जाकर ज्ञान प्राप्त करना स्त्रियों के लिए अतीत की बात हो गयी थी। वह केवल माता-पिता भाई-बन्धु आदि से अपने घर पर ही शिक्षा प्राप्त कर सकती थी। पूर्व मध्यकालीन भाष्यकारों मेघातिथि, विश्वरूप और याज्ञवल्क्य की भी यही व्यवस्था है। निःसंदेह निरूपित काल में प्रदा प्रथा के प्रभाव के कारण मुस्लिम तथा हिन्दू दोनों जातियाँ नारियों की शिक्षा की ओर उचित अभिरुचि लेने से वंचित रही। तथापि इस युग में भी कुलीन तथा समृद्ध वर्ग की नारियाँ अपने अभिभावकों द्वारा नियुक्त निजी शिक्षकों द्वारा शिक्षा प्राप्त करती थी। अभिजात वर्ग की स्त्रियाँ प्राकृत तथा संस्कृत में दक्ष होती थी काव्य, संगीत, नृत्य, वाद्य और चित्रकला में भी वे प्रवीण होती थी।

अल्तेकर के मतानुसार बालिकाओं के विवाह की वय न्यून होने के कारण उसमें और वृद्धि हो गयी। साहित्य नारी शिक्षा के प्रमाणों से परिपूर्ण है। अभिलेख नारी शिक्षा पर प्रकाश डालने में भले ही असमर्थ हैं किन्तु मूर्ति कला में नारी के शिक्षित होने के प्रमाण प्राप्त होते हैं। खजुराहो तथा भुवनेश्वर की कला में स्त्रियों को लेखन कार्य करते हुए या पुस्तक लिए हुए दर्शाया गया है। खजुराहो की कला में एक स्त्री कागज का एक टुकड़ा लिए हुए एक पुरुष के समक्ष बैठकर उससे कुछ समझ रही है। पढ़ती-लिखती हुई स्त्रियों के मनोभावों को कलाकार ने बड़ी सजीवता से दर्शाया है। पार्श्वनाथ मंदिर में अंकित स्त्री मूर्ति के बाये हाथ में कागज है तथा दाहिना हाथ उसके वक्षः स्थल पर रखा है, उसकी मुखाकृति से लग रहा है कि वह पढ़कर भयभीत है और उसका हृदय धड़क रहा है। वही दूसरी जगह कंदरिया महादेव मंदिर के दाहिने बाहरी भाग में एक स्त्री पत्र पकड़े हुए अत्यन्त मृदुता से मुस्करा रही है। विश्वनाथ मंदिर के बाहरी भाग में दाहिनी ओर अंकित एक महिला के भावों को देखकर ऐसा लगता है मानो वह विचार कर रही

है। कि आखिर पत्र में वह क्या लिखे? नारी शिक्षा पर प्रकाश डालने वाली इन मूर्तियों के माध्यम से कलाकार ने पत्र तथा उनसे होने वाली प्रतिक्रियाओं का भावांकन अत्यन्त सजीवता से किया

इस युग में बालिकाओं को दी जाने वाली शिक्षा के विषय की पुरातात्विक प्रमाणों की अपेक्षा साहित्य से अवश्य विभिन्न विषयों पर प्रकाश पड़ता है। स्त्रियों को प्राकृत तथा संस्कृत का सुंदर ज्ञान था। विल्हण ने कश्मीर की स्त्रियों की प्रशंसा में लिखा है कि वे संस्कृत एवं प्राकृत दोनों भाषाएँ बड़े अच्छे ढंग से धारा प्रवाह बोलती थीं। अभिजात वर्ग की स्त्रियों को व्यावहारिक, व्यावसायिक, आध्यात्मिक, धार्मिक तथा राजनीतिक सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती थी।

व्यावहारिक शिक्षा

शिक्षा के अंतर्गत गृह विज्ञान की शिक्षा का विशेष महत्व था और प्रत्येक स्त्री से गृह कार्य के सम्पूर्ण ज्ञान की अपेक्षा की जाती थी। पति के प्रसाधन की व्यवस्था करना पत्नी का कर्तव्य होता था। पुत्री अपने पितृ गृह में ही ये समस्त शिक्षाएँ ग्रहण कर लेती थी जिससे पतिगृह में जाकर वे श्रेष्ठ पत्नी सिद्ध हो सकें। वात्स्यायन ने कन्याओं की चौसठ अंग विद्याओं की शिक्षा का ब्योरा देते हुए कुशल गृहिणी की विशेषताएँ बताई हैं। पत्नी को वार्षिक आर्थिक ब्योरा (चिट्ठा) की शिक्षा लेनी आवश्यक होती थी। बालिकाओं को यह शिक्षा निश्चित रूप से अल्पायु उम्र में ही दी जाती थी। गृहविज्ञान के अंतर्गत सिलाई-कढ़ाई की शिक्षा भी दी जाती थी। हर्षचरित में पुष्प तथा पक्षी कढ़े हुए वस्त्रों का विवरण है, जो निश्चित रूप से स्त्रियों द्वारा ही बनाये जाते थे। सिलाई के अतिरिक्त पाकशास्त्र की शिक्षा दी जाती थी। पाक कार्य में लड्डू बनाती हुई स्त्री की आकर्षक मूर्ति खजुराहो पार्श्वनाथ मंदिर के गर्भगृह के भीतरी दाहिनी दीवाल पर उत्कीर्ण है। गृह स्वच्छता की ओर भी स्त्रियों का पर्याप्त ध्यान रहता था। ललित कला की शिक्षा में भी स्त्रियाँ बहुत आगे थीं। इस कला में नृत्य, संगीत, वाद्य, काव्य, चित्रकला तथा माल्यग्रन्थन का विशेष स्थान था। उच्चकुलों में इस शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाता था। वात्स्यायन ने संगीत, नृत्य एवं चित्रकलाओं का ज्ञान नारी के लिए वांछनीय माना है। राजकुलों में राजकुमारियों को नृत्य-संगीत, वाद्य आदि की शिक्षा के लिए अपने से अलग भी रखना पड़ता था राजकुमारियों के विवाह की योग्यता की परख उनके नृत्य की परीक्षा द्वारा भी होता था। मत्स्य पुराण में "विशोक द्वादशी" नामक व्रत का वर्णन है। जिसके अवसर पर नारियों को नृत्य संगीत करना पड़ता था। त्रिपुर की स्त्रियाँ हावभाव द्वारा वहाँ के निवासियों को अल्हादित करती थीं। नाट्य शिक्षा में स्त्रियाँ प्रवीणता प्राप्त करती थीं तथा उनकी परीक्षा होती थी। हर्ष की बहन राजश्री सभी कलाओं में निपुण थीं। चौहान शासन गूवक द्वितीय की बहन कलावती के विषय में कहा गया है कि वह चौसठ कलाओं में पारंगत थीं। आरंभ में संयोगिता को धर्मशास्त्र और गृह विज्ञान की विस्तृत शिक्षा प्रदान की गयी। यौवनावस्था के प्रारंभ में जब संयोगिता बारह वर्ष नौ मास और पाँच दिन की हो गयी तो शिक्षिका मदना उसके हृदय में सुघड़ता और पटुता की शिक्षा उतारने लगी। तदुपरांत संयोगिता शिक्षिका के सहयोग से नियम और विनय पाठ पढ़ने लगी। दक्षिण भारत में तो राजघरानों में नृत्य-संगीत कला स्त्रियों के जीवन का अभिन्न अंग प्रतीत होती है; क्योंकि दक्षिण भारतीय अभिलेख रानी की कलाओं की निपुणता की प्रशंसा में भरे पड़े हैं। निम्न परिवार की कन्याओं को भी ललित कलाओं की शिक्षा प्रधान रूप से दी जाती थी। गीत वाद्य आदि से

राजपरिवार का मनोरंजन करने; सुलाने—जगाने के लिए नियुक्त दासियों एवं गणिकाओं के लिए इन कलाओं की शिक्षा अनिवार्य थी। चित्रकला में स्त्रियों की बहुत अभिरुचि थी। खजुराहो के विश्वनाथ मंदिर के बाये बाहरी भाग में एक स्त्री को चित्र तख्ती तथा कूची पकड़े हुए दिखाया गया है। हर्षचरित में भी स्त्रियों द्वारा मंगल घट पर की गयी चित्रकारी का वर्णन है।

व्यावसायिक शिक्षा

राजपरिवार एवं कुलीन घरानों की दासियों, धात्रियों, गणिकाओं, वेश्याओं, देवदासियों, जैसी स्त्रियों के साहित्यिक एवं पुरातात्विक निर्देशों से स्त्रियों के व्यवसायों की कल्पना सहज ही की जा सकती है और इन व्यवसायों के लिए उन्हें शिक्षा भी अनिवार्य रूप से ग्रहण करनी पड़ती होगी; क्योंकि दासियों को सभी प्रकार की राजनीतिक एवं व्यावहारिक नीतियों का ज्ञान प्राप्त होता था। चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा भी स्त्रियाँ ग्रहण करती थी। 'रूसा' नामक एक स्त्री चिकित्सक ने प्रसव विज्ञान पर प्रामाणिक एवं पांडित्यपूर्ण ग्रंथ लिखा था और खलीफा हारु ने (आठवीं सदी) अरबी भाषा में अनुवाद करवाया था। स्त्री चिकित्सक अथवा धात्री (दायी) द्वारा एक स्त्री का प्रसूति दृश्य तमिलनाडु के मदुरै के मीनाक्षी मंदिर के मण्डप में अंकित है। यह एक दुर्लभ पुरातात्विक प्रमाण है। प्रसूति विज्ञान में पारंगत स्त्रियाँ बड़े वैज्ञानिक ढंग से प्रसूति कराती थी। इसकी पुष्टि भुवनेश्वर के एक द्वार पर उकेरी एक स्त्री है जिसे प्रसूति कुर्सी पर बैठे हुए दर्शाया गया है। गणित जैसे शुष्क एवं गूढ़ विषय के ज्ञान में भी स्त्रियाँ पीछे नहीं थी, और बड़ी लगन से कुछ स्त्रियों ने गणित की शिक्षा ग्रहण की थी। गणितशास्त्र की प्रसिद्ध पुस्तक "लीलावती" की रचना बारहवीं सदी के प्रसिद्ध गणितज्ञ भास्कर द्वितीय ने अपनी कन्या लीलावती को पढ़ाने के लिए की थी। स्त्रियों में उपाध्याय तथा आचार्य भी होती थी जिन्हें सात्र रहस्य वेदों के अध्यापन एवं भाणवकों को उपनयन देने का अधिकार था। यह बात संदिग्ध है। पाणिनी और पतंजलि के समय स्त्रियाँ वैदिक चरणों में अध्ययन ही नहीं अध्यापन भी करती थी। हर्ष के पश्चात् सातवीं—आठवीं सदी में भी स्त्रियों के अध्यापन कार्य की जानकारी मिलती है। शंकराचार्य के मण्डन मिश्रा का शास्त्रार्थ होने तथा परिणामस्वरूप संन्यास ले लेने पर उनकी पत्नी उभय भारती; श्रृंगगिरि में अध्यापन का कार्य करने लगी थी।

राजनीतिक शिक्षा

राज्य शासन में परामर्श एवं सहयोग के लिए नीतिशास्त्र का अनुशीलन आवश्यक होता है, इसीलिए राजनीतिक शिक्षा राजकुमारियों एवं सामंत कुमारियों की शिक्षा का प्रमुख अंग थी और उसमें वे रुची भी लेती थी। प्राचीन काल से ही रानियाँ राजनीति में अपने पतियों का सक्रिय सहयोग देते आ रही थी। इस युग में भी अनेक विधवा रानियों ने शासन कार्य भार स्वयं संभाला था। कश्मीर के शासक क्षेमगुप्त (950 ई० से 958 ई० सदी) की पत्नी दिद्दा ने अपने पति को शासन चलाने में मदद की थी और उसके सिक्कों पर 'दि-क्षेम' उत्कीर्ण है, इसमें 'दि' वर्ण दिद्दा के लिए है। सिर्फ 'क्षेम' उत्कीर्ण सिक्कों बहुत कम मात्रा में मिले हैं। पति की मृत्यु के बाद जब सारा शासन भार दिद्दा के कंधों पर आ गया तो उसने बड़े साहस से संचालन किया। यद्यपि कश्मीर के जमींदार तथा ब्राह्मण दोनों ही उसके विरुद्ध थे, किन्तु उसने सबको कुचल डाला था। सुगंधा एवं दिद्दा के सिक्कों इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने कश्मीर का शासन प्रबंध अभिभावक

के रूप में किया था। राजपुताना के सांभर के चौहान मुखिया की पत्नी सोमलादेवी के सिक्के प्राप्त हुए हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश सोमलादेवी के संबंध में पूर्ण तथ्य प्राप्त नहीं हो पाते हैं। इसने सम्भवतः दिवां के एक शताब्दी पश्चात् शासन किया था। प्रो० रेप्सन ने अप्रकाशित नोट में लिखा था कि सोमलादेवी ने पति की मृत्यु के बाद अभिभावक के रूप में शासन किया था एवं सिक्के ढलवाये थे। दक्षिण भारत का सूडिं का अभिलेख जिसकी तिथि 1048 ई० सदी है, कल्याणी के चालुक्य शासक विक्रमादित्य षष्ठम् की रानी लक्ष्मी देवी का उल्लेख है जिसने सम्राट के समान ही कल्याणी में शासन किया था।

अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा

इस समय शास्त्र के साथ अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा राजकुमारियों को अनिवार्य रूप से दी जाती थी। युद्ध विषयक ज्ञान गरिमा के प्रमाणों से साहित्य तथा प्रशस्तियाँ भरे पड़े हैं। युद्ध क्षेत्र में रानियाँ पति के साथ जाया करती थीं। विजयमल्ल की रानी पति के साथ युद्ध क्षेत्र में गयी थी। कल्याणी के चालुक्य वंश की रानी अक्कादेवी युद्ध में भाग लेती थी साथ ही युद्ध का संचालन भी करती थी। राजकुमारियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियाँ भी शस्त्र शिक्षा ग्रहण करती थीं। मौर्यकाल से ही सुसज्जित अंगरक्षक स्त्रियों के विवरण मिलते हैं। मिहिरभोज की 'गवालियर प्रशस्ति' में स्त्रियों के सैन्य समुदाय का वर्णन है जो सैनिक व्यवसाय में प्रसिद्ध था। शास्त्रार्थ की शिक्षा ग्रहण कर स्त्रियाँ आत्मनिर्भर हो जाती थीं और पुरुषों पर पूर्णरूप से निर्भर नहीं रहती थीं। आत्मनिर्भरता की द्योतक खजुराहो की मूर्तिकला में उत्कीर्ण एक स्त्री भाला, फरसा तथा धनुष बाण लिए हैं। एक अन्य स्त्री छुरा लिए हुए प्रहार करने की मुद्रा में खड़ी हैं। अपनी सुरक्षा के लिए स्त्रियाँ पुरुषों से युद्ध करती थीं कोणार्क मन्दिर में हाथी पर सवार एक स्त्री पुरुष से युद्ध कर रही हैं। इसी के साथ एक अन्य दृश्य में अश्व पर सवार स्त्री हाथ में लगाम पकड़े हैं। खजुराहो के लक्ष्मण मंदिर के दाहिने वाह्य भाग में युद्ध तथा शिकार में पुरुषों का साथ देने वाली स्त्रियों का आलेखन बड़ी सजीवता से किया गया है। भुवनेश्वर के मंदिर में विचित्र जानवर शार्दूल पर सवार स्त्रियाँ तलवार ढाल लिए युद्ध मुद्रा में दर्शायी गयी हैं। ये सभी दृश्य स्त्रियों को दी जाने वाली युद्ध शस्त्र संबंधी शिक्षा पर प्रकाश डालते हैं। अमीर खुसरो ने भी इस तथ्य पर बल प्रदान किया है कि राजकुल से संबंधित कन्याओं का अन्य प्रकार की शिक्षा के साथ सैनिक-शिक्षा अवश्य प्रदान की जानी चाहिए।

धार्मिक शिक्षा

स्त्रियाँ प्रायः धर्मपरायण होती हैं। अतः उनके लिए धार्मिक शिक्षा अनिवार्य थी। ईश्वर का पूजन सामान्य बात थी। हर्षचरित में कन्याओं द्वारा बिना जोत के पके निवारों की बलि से ईश्वर पूजा का वर्णन मिलता है। वांछित फल की प्राप्ति के लिए कन्या कठिन धार्मिक नियमों का पालन तथा व्रत करती थीं। अध्यात्म के प्रति भी इनका रुझान था। बृहस्पति की भागिनी को ब्रह्माण्ड पुराण में ब्रह्मवादिनी कहा गया है। इसने योग में सिद्धि प्राप्त कर आसक्ति रहित हो समस्त पृथ्वी का पर्यटन किया था। दक्ष कन्यायें भी ब्रह्मवादिनी शब्द से सभिहित हैं। विष्णु पुराण की मेना और धारिणी भी ब्रह्मवादिनी योगिनी एवं श्रेष्ठ ज्ञान से परिपूर्ण थीं। संनति और शतरूपा अन्य ब्रह्मवादिनी थीं। ब्रह्मवादिनियों का केवल ब्राह्मचारिणी ही रहने का विधान नहीं था परंतु वे विवाह भी करती थीं। धर्मव्रता नामक कन्या ने अपने पिता के आदेश के

अनुसार वर प्राप्त करने के लिए दुष्कर तपस्या की थी। बाल्यकाल के अन्तवर्ती अवधि में ब्रह्मचर्य व्रत अर्थात् ब्रह्मविद्या के विकास का अनुपालन कर वे अपने जीवन की पूर्वपीठिका को सुयोग्य बनाती थी। घर में रह कर वेदाध्ययन भी करती थी। पूर्व मध्ययुग में कुलीन तथा समृद्ध वर्ग की स्त्रियाँ अपने अभिभावकों द्वारा नियुक्त निजी शिक्षको द्वारा शिक्षा प्राप्त करती थी। अभिजात वर्ग की स्त्रियाँ प्राकृत तथा संस्कृत में दक्ष होती थी। गाथसप्तशती नामक ग्रंथ में अनेक विदुषी स्त्रियों एवं कवयित्रियों का उल्लेख मिलता है रेवा, रोहा, माधवी, अनुलक्ष्मी, पाही, बद्धवही और राशि प्रभा जैसी कवयित्रियाँ अपनी प्रतिभा और कल्पना शक्ति के लिए विख्यात थी। काव्य मीमांसा का वर्णन प्रमाण है कि राजकुमारियाँ राजमंत्री की पुत्रियाँ, गणिकायें एवं नटनियाँ शास्त्रज्ञान से स्फीत, प्रतिभासम्पन्न कवयित्रियाँ होती थी। चौहान शासक गूवक द्वितीय की बहन कलावती चौसठ कलाओ में पारंगत थी। तद्युगीन साहित्य में संस्कृत भाषा की कुछ अन्य उच्च कोटि की कवयित्रियों का भी वर्णन मिलता है। शिलोभट्टारिका नामक कवयित्री अपनी सरल भाषा एवं ओजपूर्ण शैली में रचना हेतु अत्यन्त प्रसिद्ध थी। देवी गुजरात प्रदेश की एक अन्य प्रसिद्ध लेखिका थी, जो अपनी मृत्यु के उपरांत भी अपनी रचनाओं के माध्यम से लोगो के हृदय को उद्वेलित करती थी। विजयानक नामक कवयित्री की तुलना कालिदास से करते हुए यह कहा गया है कि विदर्भ क्षेत्र में कालिदास के उपरांत सर्वश्रेष्ठ रचनाकार विजयानक है जिसकी प्रसिद्धि चतुर्दिक है। तद्युगीन सभी कवियों एवं कवयित्रियों में विजयानक निःसंदेह सर्वश्रेष्ठ थी; राजशेखर ने संस्कृत भाषा की इस लेखिका की तुलना साक्षात् सरस्वती से स्थापित की है। इस युग में अनेक ऐसी प्रज्ञासम्पन्न नारियाँ हुईं, जिन्होंने अपनी उत्कृष्ट रचना शैली और काव्य कला से साहित्यिक योगदान प्रदान किया। मुसलमान शासको एवं सैनिकों के वासनात्मक दृष्टि से सुरक्षित रखने के लिए हिन्दू अपनी कन्याओं का विवाह छोटी अवस्था में कर देते थे। अतः ऐसी अवस्था में स्त्री शिक्षा का प्रश्न ही नहीं उठता था। पुनः अल्तेकर के अनुसार वेदों को अपौरुषेय मान लेने से, तथा स्त्रियों को शूद्र की कोटि में रखने से भी स्त्री शिक्षा की प्रगति में अवरोध उत्पन्न हुआ। इससे उनमें वैदिक अध्ययन का अधिकार ही नहीं रह गया। अल्तेकर के अनुसार स्त्रियों को शूद्र की कोटि में रखने से स्त्री जगत के अधिकारों की बड़ी क्षति हुई। बाल विवाह की यह प्रथा केवल भारत में ही नहीं थी बल्कि वरन् यूरोप के भी सभी देशों में इसी समय बाल विवाह की प्रथा प्रचलित थी।

इस प्रकार अवलोकित काल में नारी-शिक्षा राजघरानों तथा समृद्ध परिवारों तक सीमित थी। उनकी स्वतंत्रता का अपहरण पर्दा-प्रथा और अल्पवय में विवाह की प्रथा के प्रचलन से हुआ, जिससे शिक्षा की क्रमशः अवनति होती गयी। समाज में निम्न वर्ग तथा निर्धन परिवार की स्त्रियों को शिक्षा का उचित अवसर प्राप्त होना अपेक्षाकृत कठिन होता जा रहा था। यद्यपि समृद्ध परिवारों में शिष्य का किसी हद तक प्रचार था, यद्यपि समृद्ध परिवारों में शिक्षा का किसी हद तक प्रचार था, तथापि सामाजिक एवं धार्मिक आदर्शों के परिवर्तन तथा राजनैतिक उथल-पुथल के कारणों से जनसाधारण में स्त्री शिक्षा का उत्तरोत्तर ह्रास दृष्टिगोचर होता है। इस काल में स्त्रियों में अध्ययन-अध्यापन की परम्परा पूर्वतः चल रही थी, किन्तु उनके वेदाध्ययन पर प्रतिबन्ध लग गया था। इसे साथ ही यह भी देखा जाता है कि उच्च वर्ग की स्त्रियों के लिए ललित कलाओं एवं अन्य बहुत से विषयों की शिक्षा सुचारु रूप से दी जाती थी। जहां तक सामान्य वर्ग की स्त्रियों का प्रश्न है वह अधिक संतोषजनक नहीं कहा जा सकता। इस काल में स्त्री शिक्षा सामान्य न होकर वर्ग विशेष तक सीमित हो गयी थी।

संदर्भ

1. अल्तेकर, ए0एस0—दि पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिंदू सिविलाइजेशन ।
2. डॉ0 गंगा सागर राम का हिन्दी अनुवाद, वाराणसी, 1964,
3. विल्हण — विक्रमांकदेवचरित, 18.6,

तस्य तस्य किं ब्रूमः यत्र अपरं किं स्त्रीणामपि वचः ।

जन्म-भाषावत् एवं संस्कृत प्राकृतं च प्रत्यावांस विलसति ।।

4. कथासरित्सागर; 95.92; के0 एन0 शर्मा का हिन्दी अनुवाद, पटना 1960
5. जयानक कृत पृथ्वीराज विजय 5.38; एम0 एम0 जी0 एच0 ओझा वैदिक मंत्रालय अजमेर; 1941 ।
6. स्मिथ, वी0 — केटलाग ऑफ द क्वाइन्स इन इंडिया म्यूजियम कोलकाता, भाग 1 ।
7. चौधरी, हेमचन्द्र राय — पोलिटिकल हिस्ट्री ऑफ ऐशियेन्ट इंडिया, ।
8. काव्यमीमांसा, एम0 कृष्णामचारी कृत क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर, ।
9. विल्हण — विक्रमांकदेव चरित, 18/6 ।

तस्य तस्य किं ब्रूमः यत्र अपरं किं स्त्रीणामपि वचः ।

जन्म भाषावत् एवं संस्कृत प्राकृतं च प्रत्यावासं विलसति ।।

10. शंकर दिग्विजय, 8.5, विधाय भार्या विदुषी सदस्यां, विधियतां वादकथा सुधीन्द्र ।
11. नैषधीयचरित, पपए 41, दी पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन
12. काव्यमीमांसा ।

पुरुषवद्योलितोव कवी भवेयुः। श्रूयन्ते दृश्यन्ते च राज पुत्रयो महामात्र- दुहितरो गणिकाः कौटुम्बिक भार्याश्च शास्त्र पहित बुद्धयः कवयश्च ।।

13. अल्तेकर, ए0एस0—एजुकेशन इन ऐशियेन्ट इण्डिया, ।
14. काणें, पी0वी—हिस्ट्री ऑफ धर्मशास्त्र, भाग—दो, खण्ड 1 ।
15. वाशम, ए0एल0—द वण्डर दैट वाज इण्डिया, ।
16. वैद्य, सी0वी0—मेडुवल हिन्दू इण्डिया, ।
17. अल्तेकर, ए0एस0—दि पोजिशन ऑफ वुमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन,
